

Shri Sanjay Leela Bhansali

Shri Sanjay Leela Bhansali is a world-renowned Indian film director, who has created his own brand of cinema with films that range from beloved classics to contemporary romances, from tales of man versus destiny to sweeping family sagas.

2. Born on February 24, 1963 in Mumbai, Shri Bhansali got training at the Film and Television Institute of India (FTII) in Pune. In 1999, he founded his home production, which has grown from strength to strength, and today has to its credit India's most enviable film catalogue with top grossers in the entertainment business among internationally recognized films of social impact. He has directed seven films to date. In 2008, he also became the first Indian film director to direct an opera-Padmavati-in France, a feat he described as challenging but extremely rewarding, and which was received with thunderous applause at an iconic Paris opera house

3. Shri Bhansali has not only directed films that entice global audiences, but also shepherded films to great success in the role of producer. He has produced nine films. He has been a full-fledged music composer on two of his films, and is currently composing the soundtrack of the much-awaited Bajirao Mastani. From his first film, Khamoshi the Musical, his talent became the talk of the nation which reached to further creative and social boundaries with his magnum opuses like Hum Dil De Chuke Sanam, Devdas and Black. He created a unique visual delight in Saawariya and with his next film, Guzaarish, a script that was inducted into the American Film Academy's Library of Motion Picture. Goliyon ki Raasleela Ram-Leela was a commercial blockbuster that won several awards in India.

4. Shri Bhansali is known for grandeur and visual opulence that translate into cinematic and auditory masterpieces. Shri Bhansali's grasp of music composition was noticed and honored, at the outset of his career, with a virgin title, that of "Director of Songs". This work set the tone for his versatility as a director that now also composes his films' music. His cinema is acclaimed at home and abroad, with myriad awards - national and international - to his credit. Shri Bhansali is currently directing a 17th century epic, Bajirao Mastani, set in his home state of Maharashtra.

5. Shri Bhansali began earning awards and accolades for his work from the very beginning of his directing career. His debut film Khamoshi won a Filmfare award in the Critics category in 1997, which set the stage for the sheer variety of awards - from Filmfare and International Indian Film Academy Awards (IIFA) to British Academy of Film and Television Arts (BAFTA) nomination to a Cannes selection and most prestigiously thus far, two National Film awards, one each for Black and Devdas. In 2011, Guzaarish featured at Korea's Busan International Film Festival. While Devdas, Black and Guzaarish were international festival gems that also received their due as serious cinema - Devdas was nominated for the British Academy of Film & Television Arts (BAFTA) as well as becoming an official Cannes selection for Out-of-Competition screening - Shri Bhansali's lighter films are no less bestowed honours, such as Goliyon ki Raasleela Ram-Leela was, as the first Indian film to ever open the Marrakech International Film Festival. His film Black was listed as the 5th best film of the year 2005 by Time Magazine (Europe) critic Richard Corliss in his annual list of top 10 films and was also featured at Casablanca Film Festival, in 2005. Shri Bhansali has won over eight Indian awards as a Director, not to mention countless Best Picture and Screenplay awards and tens of nominations, in every category, for each of his films.



श्री संजय लीला भंसाली

श्री संजय लीला भंसाली, एक विश्वविख्यात भारतीय फ़िल्म निर्देशक हैं जिन्होंने फ़िल्मों के साथ अपनी अलग प्रकार की सिनेमा को जन्म दिया है जो उत्कृष्ट कहानियों से लेकर समकालिक प्रेम गाथाओं तक, इंसान और उसकी नियति की कशमकश से लेकर पारिवारिक ताने-बाने को बयां करती हैं।

2. आपका जन्म फरवरी 24, 1963 को मुम्बई में हुआ। आपने पुणे के भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफ टी आई आई) से प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 1999 में आपने स्व-निर्माण का सिलसिला शुरू किया जो दिन प्रतिदिन प्रसिद्धि की ऊंचाइयां छूता चला गया और आज इसके नाम पर सामाजिक प्रभाव से भरपूर अंतराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फिल्मों के साथ मनोरंजन-व्यापार में व्यवसायिक रूप से सर्वाधिक सफल भारतीय फिल्मों की लंबी सूची दर्ज है। आपने अब तक सात फिल्मों का निर्देशन किया है। वर्ष 2008 में आप फ्रांस में एक ओपरा-पदमावती को निर्देशित करने वाले भारत के पहले फिल्म निर्देशक बने, जिस कार्य को आपने चुनौतीपूर्ण लेकिन आत्म-संतोष देने वाला माना और इसके लिए महान पेरिस ओपरा हाउस में करतल-ध्वनि से आपकी सराहना की गई।

3. आपने न केवल विश्वभर के दर्शकों को सम्मोहित करने वाली फ़िल्मों का निर्देशन किया है बल्कि निर्माता की भूमिका में भी आपने फ़िल्मों को नई दिशा दी है। आपने नौ फ़िल्मों का निर्माण किया है। आप आपनी दो फ़िल्मों के एक-मात्र संगीत निर्देशक भी रहे हैं और वर्तमान मे आप बहु-प्रतीक्षित फ़िल्म बाजीराव मस्तानी के संगीत-कार्य में जुटे हैं। अपनी पहली फ़िल्म, खामोशी दि म्यूजिकल से पूरा देश आपकी प्रतिभा का कायल हुआ जिसके बाद इस प्रतिभा ने हम दिल दे चुके सनम, देवदास और ब्लैक जैसी महान फ़िल्मों से सृजनशीलता और सामाजिक सीमाओं की नई बुलंदियों की परिभाषा लिखी। आपने सांवरिया में अपने विशेष फिल्मांकन की छाप छोड़ी और आपकी अगली फ़िल्म गुजारिश की पटकथा को अमेरिकन अकादमिज़ लाइब्रेरी ऑव मोशन पिक्चर्स में शामिल किया गया। व्यवसायिक सफलता की दृष्टि से गोलियों की रासलीला राम-लीला एक जबरदस्त फ़िल्म साबित हुई जिसने भारत में अनेक पुरस्कार जीते।

4. आपने अपनी भव्यता और विपुल छायांकन की छटा के लिए जाने जाते हैं जो रूपहले परदे के माध्यम से सिने जगत तथा दर्शकों की दृष्टि से श्रेष्ठ कृतियों में परिणत गई हैं। संगीत-रचना पर आपकी जबरदस्त पकड़ पर सबों का ध्यान गया तथा सम्मान की दृष्टि से देखा गया और आपके अपने कॅरियर के प्रारंभ में ही "गीतों का निर्देशक" का खिताब दे दिया गया। इससे उस निर्देशक की बहुमुखी प्रतिभा उजागर हुई जो आज अपनी फ़िल्मों का संगीत भी दे रहा है। आपकी फ़िल्मों को भारत और विदेश, दोनों जगह अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कारों के माध्यम से सराहा गया है। आप अभी अपने गृह राज्य की पृष्ठभूमि वाली 17वीं शताब्दी की वीरगाथा पर आधारित फ़िल्म बाजीराव मस्तानी के निर्देशन-कार्य में जुटे हैं।

5. आपने अपने निर्देशन कॅरियर के प्रारंभ से ही आपने काम का लोहा मनवाना शुरू कर दिया था और पुरस्कार प्राप्त करने लगे थे। आपकी पहली फ़िल्म खामोशी ने वर्ष 1947 में आलोचक श्रेणी में फिल्मफेयर पुरस्कार जीता जिसके पश्चात् फिल्मफेयर से इंटरनेशनल इंडियन फिल्म अकादमी अवॉर्डस् (आईफा), बिट्रिश अकादमी ऑव फिल्म एंड टेलीविजन आर्टस से लेकर केन्स समारोह के लिए मनोनीत किए गए तथा दो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त करके पुरस्कारों का अंबार लगा दिया। वर्ष 2011 में गुजारिश, कोरिया के बूसान अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिखाई गई। जबकि देवदास, ब्लैक और गुजारिश अंतरराष्ट्रीय समारोहों में आकर्षण का केन्द्र बनी और उन्हें भी गंभीर फिल्म के तौर पर उचित सम्मान प्राप्त हुआ। बिट्रिश अकादमी ऑव फिल्म एंड टेलीविजन आर्टस् के लिए मनोनीत किए जाने के साथ-साथ देवदास प्रतियोगिता से अलग प्रदर्शन हेतु केन्स में अधिकारिक तौर पर चुनी गई। आपकी हल्की-फुल्की फिल्मों जैसे गोलियों की रासलीला राम-लीला को भी कम सम्मान नहीं मिले हैं। इसे माराकेश अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोह की पहली भारतीय उदघाटक फिल्म बनने का गौरव प्राप्त हुआ। आपकी फ़िल्म ब्लैक को आलोचक रिचर्ड कार्लिस, टाइम पत्रिका (यूरोप) ने वर्ष 2005 की सर्वश्रेष्ठ 10 फ़िल्मों की अपनी वार्षिक सूची में इसे पांचवां स्थान दिया और यह फिल्म वर्ष 2005 में कासाब्लांका फिल्म समारोह में भी प्रदर्शित की गई। अनगिनत सर्वश्रेष्ठ फिल्म और पटकथा पुरस्कार तथा अपनी प्रत्येक फ़िल्म के लिए प्रत्येक वर्ग में बार-बार मनोनीत किए जाने के साथ-साथ आपने निर्देशक के तौर पर आपने आठ से अधिक भारतीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं।